ध्येयIAS®

most trusted since 2003

जून | 2024

जनजातीय कला और संस्कृति

परीक्षोपयोगी सारगर्भित नोट्स

सरल व बोधगम्य भाषाशैली का उपयोग

डायग्राम, टेबल व चित्रों का तार्किक उपयोग

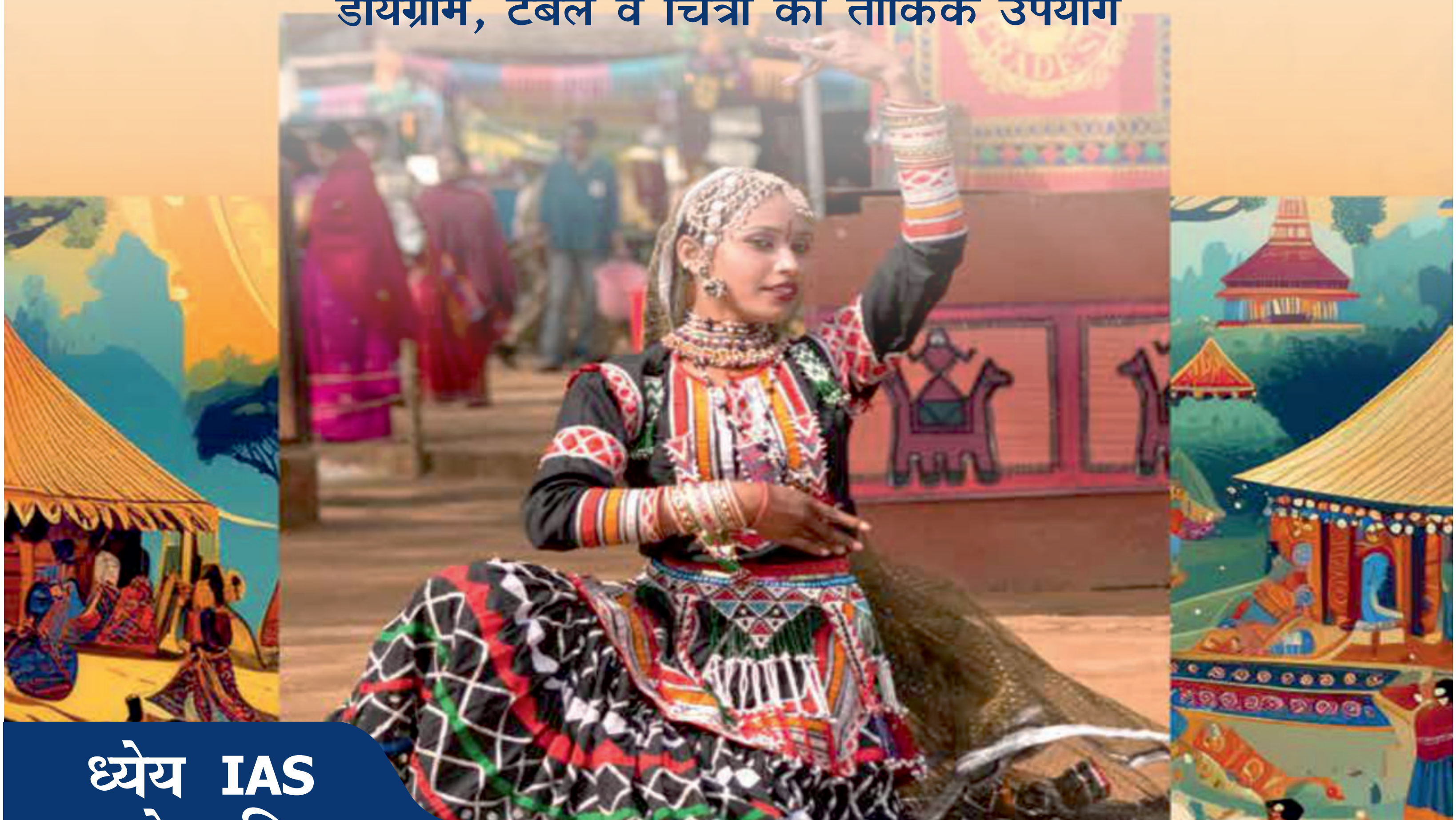

ध्येय IAS

कुरुक्षेत्र ज़िस्ट

जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए अभिनव विज्ञान परियोजनाएं

परिचय:

में एकता" वाली भूमि, भारत में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आदिवासी आबादी (8.9%) निवास करती है। इन समुदायों की एक अपनी समृद्ध परंपराएं, संस्कृतियां और विरासतें हैं।

विज्ञान परियोजनाएं आदिवासी विरासत को संरक्षित करने और समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

पूर्वोत्तर की पहाड़ियों से लेकर मध्य भारत के मैदानों तक, इन परियोजनाओं का प्रभाव विशेष रूप में देखा जा सकता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा जनजातीय संस्कृति का संरक्षण:

- **ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेजीकरण**:
  - डीएसटी पारंपरिक प्रथाओं, औषधीय ज्ञान, मौखिक इतिहास और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को डिजिटलीकरण के माध्यम से रिकॉर्ड करने के लिए परियोजनाओं का समर्थन करता है, ताकि इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया जा सके।
- **सांस्कृतिक विरासत स्थलों का संरक्षण**:
  - विरासत स्थलों की स्थिति का आकलन और निगरानी करने हेतु संरक्षण योजना बनाना। साथ ही जन जागरूकता बढ़ाने के लिए रिमोट सेंसिंग, जीआईएस, 3डी मॉडलिंग के उपयोग को बढ़ावा देना।
- **जैव विविधता और सांस्कृतिक परिदृश्यों का संरक्षण**:
  - पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान (TEK) को आधुनिक संरक्षण विज्ञान के साथ जोड़ना, आदिवासी समुदायों के साथ मिलकर काम करना और सतत प्रबंधन रणनीतियाँ विकसित करना।
- **सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशन**:
  - SATHI और SEED जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से वित्तपोषण और समर्थन देने के अलावा जमीनी स्तर पर नवाचार एवं उद्यमशीलता को बढ़ावा देना। साथ ही वैज्ञानिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्थानीय चुनौतियों का समाधान।
  - विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत उत्तर पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केन्द्र (नेक्टर) द्वारा किए गए

- **प्रयास**:
    - मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसरों का सृजन करता है ।
    - पर्यावरण के अनुकूल योग मैट का उत्पादन, जलकुंभी के उपयोग को बढ़ावा देता है।
    - बांस-आधारित विज्ञान परियोजनाएं: बांस के उत्पादों का मूल्य संवर्धन, बांस आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
    - पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों का संरक्षण: असम और मणिपुर में कुम्हार समुदायों को सशक्त बनाना, पारंपरिक कला और शिल्प को संरक्षित करना, साथ ही स्थायी आजीविका के अवसर प्रदान करना।
    - राज्य विशिष्ट प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र (टीडीसी): प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन और प्रसार करना, कौशल विकास और प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करना।
    - बांस और बेंत विकास संस्थान (बीसीडीआई): बांस क्षेत्र को बढ़ावा देना, मूल्य संवर्धन और बाजार संपर्क बढ़ाना ।
    - नेक्टर-बीसीडीआई इनक्यूबेशन सह नवाचार और प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र (आईआईटीडीसी): प्रशिक्षण और कौशल विकास पर ध्यान देने के साथ-साथ नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना।
    - सांस्कृतिक महत्व: औषधीय और आध्यात्मिक महत्व, पारंपरिक चिकित्सा और कला में उपयोग तथा सांस्कृतिक प्रतीक और अनुष्ठानों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका।
    - पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों का महत्व: यह कला, शिल्प और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। साथ ही आजीविका के स्रोत का भी निर्माण करता है। इस प्रकार यह सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।
- **कल्म कटिंग/स्टेम सेटिंग तकनीक**:
    - यह बांस के तने के विशिष्ट भागों का चयन कर उन्हें सटीक नोड्स पर सावधानीपूर्वक काटने पर आधारित है। इन कटे हुए तनों को फिर से मिट्टी में रोपा जाता है, जिससे नए बांस के पौधे उगते हैं। ये पौधे परिपक्व होने पर बांसुरी निर्माण हेतु उपयोगी उच्च गुणवत्ता वाले बांस प्रदान करते हैं।

- यह तकनीक न केवल बांसुरी निर्माण को टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल नवीकरणीय संसाधन बनाता है, बल्कि आदिवासी समुदायों के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण में भी योगदान देता है।

- **गैसीफायर और अन्य बांस उत्पाद**:
  - भारत, विश्व में बांस का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक होने के नाते, इस बहुमुखी संसाधन से मूल्य वर्धित उत्पादों का विकास करने में अग्रणी रहा है।
  - नेक्टर द्वारा विकसित गैसीफायर और अन्य बांस उत्पाद पर्यावरणीय होने के साथ ही आर्थिक रूप से भी व्यवहार्य हैं। ये प्रौद्योगिकियां ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उत्पन्न कर बांस आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करती हैं।
- **हरित सामग्री और आदिवासी संस्कृति**:
  - नेक्टर बांस आधारित प्रौद्योगिकियों के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यह आदिवासी समुदायों के उत्थान और उनकी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी योगदान देता है।
  - इसका उद्देश्य बांस-आधारित टिकाऊ बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। इस संदर्भ में बांस से बने बाथरूम और वॉशबेसिन के नल, शॉवर, रसोई के नल, बिजली के सॉकेट और प्लग विकसित किए गए हैं।
- **बांस के नल के साथ प्रोद्योगिकी सम्मिश्रण**:
  - बांस के नल पारंपरिक बांस शिल्प कौशल और आधुनिक तकनीक का मिश्रण हैं। ये प्लास्टिक और धातु के नलों के किफायती विकल्प हैं। बांस के नलों का निर्माण छोटे पैमाने पर इकाइयों में किया जा सकता है।
  - बांस आधारित प्रौद्योगिकियां सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हैं।
- **बांस जल टॉवर**: **पारंपरिक ज्ञान का आधुनिक विज्ञान अनुप्रयोग**
  - बांस जल टॉवर, आदिवासी संस्कृतियों में पाए जाने वाले एक उपयोगी ढांचे हैं। इनका उपयोग वर्षा जल को भंडारित करने के लिए किया जाता है, जो शुष्क मौसम या सूखे के दौरान आवश्यक जल स्रोत प्रदान करते हैं।
  - चेरापूंजी, भारत में, दुनिया में सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान होने के बावजूद, सर्दियों में पानी की कमी का सामना करता है। इस समस्या को हल करने के लिए, रामकृष्ण मिशन स्कूल परिसर में ग्रामीणों और स्थानीय समुदाय द्वारा स्वामित्व और संचालित बांस जल टॉवर स्थापित किया गया है।

- **कामेंग और मकलंग गाँवों में कम लागत वाला जल उपचार संयंत्र**:
    - मणिपुर के लामसांग उपखंड के कामेंग और मकलंग गाँव, जल संकट और अपर्याप्त जल उपचार सुविधाओं से जूझ रहे हैं। इन गाँवों में, पीने के पानी की कमी और निम्न गुणवत्ता, स्वास्थ्य, स्वच्छता और जीवन स्तर पर गंभीर प्रभाव डालती है।
    - नेक्टर द्वारा समर्थित एक परियोजना के तहत, इन गाँवों में कम लागत वाला जल उपचार संयंत्र स्थापित किया गया है। यह संयंत्र 'रफिंग फिल्टर' और 'बायो सैंड फिल्टर' तकनीक के संयोजन का उपयोग कर जल-सुरक्षा और स्वास्थ्य सुधार हेतु एक तकनीकी समाधान प्रदान करता है।
- **कौशल विकास एवं रोजगार सृजन**:
    - नेक्टर बांस आधारित कौशल विकास और रोजगार सृजन कार्यक्रमों के माध्यम से आदिवासी समुदायों के सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभा रहा है। यह इन के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत है। समावेशी, टिकाऊ और समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाकर, बांस की समृद्ध विरासत को संरक्षित करते हुए एक समृद्ध और समावेशी भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।
- **पर्यावरण**, **वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के प्रयास**
    - पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान (TEK) का दस्तावेजीकरण: TEK को संरक्षित करने और उसका उपयोग करने के लिए परियोजनाएं, वैज्ञानिकों, आदिवासी समुदायों और स्थानीय संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करती हैं।
    - जैव विविधता संरक्षण और सतत आजीविका: वन पारिस्थितिकी तंत्र बहाली, गैर-लकड़ी वन उपज (NTFP) उद्यमों और इको-पर्यटन को बढ़ावा देकर जैव विविधता संरक्षण को आजीविका के साथ जोड़ा जाता है।
    - समुदाय-आधारित वन प्रबंधन: संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) जैसी योजनाएं आदिवासी समुदायों को वन संरक्षण और प्रबंधन में भाग लेने के लिए सशक्त बनाती हैं।
    - जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन: जलवायु अनुकूल कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा और आपदा जोखिम न्यूनीकरण उपायों को बढ़ावा दिया जाता है।
    - क्षमता निर्माण और जागरूकता अभियान: दीर्घकालीन प्रथाओं, अपशिष्ट प्रबंधन, जैव विविधता संरक्षण और जलवायु परिवर्तन पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
    - इस प्रकार भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विज्ञान परियोजनाओं ने पारंपरिक ज्ञान (TEK) को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर, जैव विविधता संरक्षण, सतत आजीविका, वन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, क्षमता निर्माण और जागरूकता अभियानों पर ध्यान केंद्रित किया है।

थेय्यम - जनजातीय सांस्कृतिक नृत्य

परिचय:

- थेय्यम, केरल के उत्तरी भागों में प्रचलित एक प्राचीन अनुष्ठान नृत्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत प्रदर्शनों के लिए जाना जाता है। सदियों से, यह नृत्य न केवल मनोरंजन का साधन रहा है, बल्कि यह आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक रहा है।
- थेय्यम, का नाम दैवम से लिया गया है, जिसका अर्थ है भगवान। थेय्यम प्रदर्शन, को अक्सर कालियाट्टम, थेयमकेड्टु या थिरायडियानथिरम के नाम से भी जाना जाता है।
- वर्तमान में यह पारंपरिक उत्सवों तक ही सीमित नहीं है। इसका समकालीन महत्व सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक आयामों की विविधता में निहित है, जो इसे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और यहां तक कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रासंगिक बनाता है।

थेय्यम का सांस्कृतिक महत्व:

- सांस्कृतिक विरासत का संरक्षक: यह केरल का प्राचीन कला रूप है, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ि समुदायों द्वारा संरक्षित किया गया है, यह लोककथाओं, पौराणिक कथाओं और विश्वासों को जीवित रखता है।
- अद्वितीय कलात्मक अभिव्यक्ति: अपनी जटिल वेशभूषा, मुखौटों, संगीत और नृत्य प्रदर्शनों के माध्यम से यह कलाकारों द्वारा अत्यधिक कौशल और समर्पण की मांग करता है, जो देवी-देवताओं और आत्माओं का रूप धारण करते हैं।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान: यह विभिन्न जातियों और धार्मिक समूहों के लोगों को एक साथ लाता है, जो साझा अनुभव और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से जुड़ते हैं।
- थेय्यम का आर्थिक महत्व:
- स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है: थेय्यम उत्सव पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। होटल, रेस्तरां, परिवहन और हस्तशिल्प उद्योग इन उत्सवों से लाभान्वित होते हैं।
- रोजगार सृजन: थेय्यम कलाकारों, संगीतकारों, कारीगरों और अन्य लोगों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है।
- सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देता है: थेय्यम केरल को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह राज्य की अनूठी संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित करता है, जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है।

थेय्यम का सामाजिक महत्व:

- सामाजिक एकजुटता को मजबूत करता है: थेय्यम उत्सव समुदायों को एक साथ लाते हैं और सामाजिक एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं। लोग विभिन्न धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं और एक साझा अनुभव में भाग लेते हैं।
- सामाजिक मुद्दों को संबोधित करता है: थेय्यम प्रदर्शन सामाजिक मुद्दों, जैसे जातिवाद, लैंगिक भेदभाव और पर्यावरणीय चिंताओं को उजागर करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। यह सामाजिक परिवर्तन और न्याय को बढ़ावा देने में योगदान देता है।
- सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है: थेय्यम स्थानीय लोगों के लिए सांस्कृतिक पहचान की भावना को मजबूत करने में मदद करता है। यह उन्हें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी समृद्ध विरासत पर गर्व करने का अवसर प्रदान करता है।

क्षेत्रीय और सांस्कृतिक जड़ें

- थेय्यम मुख्यतः केरल के कासरगोड, कन्नूर, वायनाड और कोझिकोड जिलों में प्रचलित है। यह कला कर्नाटक के तुलुनाडु क्षेत्र में 'भूटा कोला' के रूप में भी प्रचलित है। कासरगोड के कोप्पलार समुदाय की थुलुनाड संस्कृति और थुलु भाषा में यह 'नालकेडयार' के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ नृत्य है। माना जाता है कि कलनाडिकल एक मातृसत्तात्मक आदिवासी समाज है जो वायनाड की पहाड़ियों में आकर बस गया। यह प्राचीन परंपरा स्थानीय ग्रामीण समुदायों के सामाजिक-आर्थिक और धार्मिक ताने-बाने के साथ समृद्ध है। 2018-19 में, केरल सरकार ने थेय्यम कला अकादमी की स्थापना की घोषणा की, जिसका उद्देश्य कलात्मक और ऐतिहासिक रुचि की वस्तुओं को संरक्षित और पुनर्जीवित करना है।

कलाकार और प्रदर्शन

थेय्यम कलाकार, देवताओं, आत्माओं या पैतृक नायकों का वेश धारण करते हैं और विस्तृत अनुष्ठानों और परिवर्तनों से गुजरते हैं। जटिल वेशभूषा, ज्वलंत श्रृंगार और उन्मादी नृत्य आंदोलनों के माध्यम से, थेय्यम कलाकार सांसारिक और दिव्य क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटते हैं। थेय्यम ग्रामीण समाज के लोकाचार और मूल्यों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

अनुष्ठानिक घटक

- थेय्यम प्रदर्शन के शुरुआती चरण को वेल्लट्टम या थोट्टम पाटू के रूप में जाना जाता है। इसमें कलाकार एक साधारण हेडड्रेस में ढोल बजाने वालों के साथ, मंदिर या थेय्यम के देवता की मिथक को पढ़ता है। इसके बाद, कावु (पवित्र उपवन) में पारंपरिक रूप से थेय्यम प्रदर्शन होते हैं। ये उपवन जैव विविधता के महत्वपूर्ण भंडार के रूप में कार्य करते हैं और सांप्रदायिक सामंजस्य और भूमि से आध्यात्मिक संबंधों को बढ़ावा देते हैं।

फसल का प्रतीक:

- थेय्यम प्रदर्शन अक्सर महत्वपूर्ण त्यौहारों या खगोलीय संरेखण के साथ मिलता-जुलता है। यह प्रदर्शन आमतौर पर सर्दियों के दौरान आयोजित किए जाते हैं, जो कृषि के साथ संरेखित होते हैं जब ग्रामीण अपनी खेती की गतिविधियों को बाधित किए बिना सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। थेय्यम उन कुछ रीति-रिवाजों में से एक है जिसमें चावल के दाने दक्षिणा के रूप में चढ़ाए जाते हैं, जो देवी माँ के आशीर्वाद का प्रतीक है।

जाति आधारित प्रकृति

- थेय्यम प्रदर्शन अक्सर विशिष्ट जातियों से जुड़े होते हैं, खासतौर पर समाज के निचले तबके से संबंधित जातियों से। प्रत्येक जाति केवल अपने देवता के विशिष्ट थेय्यम का प्रदर्शन कर सकती है, जिससे परंपरा को संरक्षित करने और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्राकृतिक श्रृंगार, पोशाक और पारंपरिक वाद्ययंत्र

- थेय्यम के कलाकारों द्वारा पहना जाने वाला विस्तृत श्रृंगार और रंगबिरंगा परिधान थेय्यम की सबसे खास विशेषताओं में से एक है। चावल के पाउडर और हल्दी जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से बना श्रृंगार कलाकारों को दैवीय या पैतृक प्राणियों में बदल देता है। नारियल के पत्तों और अन्य प्राकृतिक सामग्रियों से बने जटिल डिजाइन और आभूषणों से सजी रंगबिरंगी पोशाकें होती हैं। पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र जैसे कि चेंडा और इलाथलम प्रदर्शन के साथ ताल प्रदान करते हैं और समग्र माहौल को बढ़ाते हैं।

थेय्यम के विभिन्न प्रकार

- थेय्यम के लगभग 400 देवी-देवता और कथाएं शामिल हैं। यह मुख्य रूप से भगवती, काली, चामुंडी और भद्रकाली जैसी मातृ देवी के पूजन पर आधारित है। इसके अतिरिक्त इसमें, मानव आकृतियों और भूमि इतिहास संबंधित देवता और आदिवासी संस्कृतियों के आंकड़े शामिल हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

- थेय्यम ग्रामीण जीवन के ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक आयामों को देखने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टि के रूप में कार्य करता है। यह सामाजिक कुरीतियों और उसके समाधान के प्रति जनजागरण का भी एक महत्वपूर्ण मंच है। थेय्यम के प्रदर्शन में सामुदायिक भागीदारी इसे सामाजिक सामंजस्य और एकजुटता के एक स्थान के रूप में परिवर्तित करती है।

पर्यावरणीय जागरूकता

- थेय्यम आदिवासी ज्ञान, जीवनशैली और पारिस्थितिकी को समझने की दिशा में एक आकर्षक मंच के रूप में कार्य करता है। यह स्थानीय समुदायों और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच सहजीवी संबंधों में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। थेय्यम अनुष्ठान पवित्र उपवनों में किए जाते हैं, जो जैव विविधता के हॉटस्पॉट के रूप में काम करते हैं।

- समकालीन महत्व
- थेय्यम का समकालीन महत्व बहुआयामी है। यह एक स्थायी सांस्कृतिक घटना के रूप में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक है। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है और कलाकारों, संगीतकारों, पोशाक निर्माताओं और कारीगरों के लिए आजीविका के अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्षतः थेय्यम, एक प्राचीन अनुष्ठानिक नृत्य रूप, ग्रामीण जीवन, संस्कृति, इतिहास, पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था पर ज्ञान के भंडार के रूप में एक स्थायी महत्व रखता है। यह एक जीवंत और आकर्षक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है जो सामुदायिक एकता, सामाजिक जागरूकता और पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा देती है।

सांस्कृतिक समरसता के संरक्षण में आदिवासी कला का योगदान

संदर्भ :

आदिवासी कला भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कला सदियों से चली आ रही परंपराओं, रीति-रिवाजों और विश्वासों को दर्शाती है। आदिवासी कला न केवल सुंदर है, बल्कि यह प्रकृति, समुदाय और आध्यात्मिकता के साथ गहरे संबंध को भी दर्शाती है।

प्रत्येक रचना की अपनी व्याख्या होती है, चाहे वह उत्तर-पूर्वी राज्यों से हो या गुजरात के काठियावाड़ से, आदिवासी भारत के विभिन्न और बहुमुखी समुदायों द्वारा संजोए गए अद्वितीय विश्वासों के प्रतिबिंब के रूप में हमें आकर्षित करते हैं। आदिवासी लोग अपनी प्राचीन संस्कृति को जीवित रखने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, जिस संस्कृति में है प्रकृति का संगीत, सामुदायिक परंपराएं, अनुष्ठान और कला, जिनका सीधा नाता आसपास के परिवेश से है, कुदरती अवयवों से है। प्रकृति ने, उसके संसाधनों ने अपनी तरह उन आदिवासियों को सोचना, समझना और रहना सिखाया है जो आदिवासी अपने पर्यावरण की देखभाल करते हैं और अपने पुश्तैनी संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करके सम्पूर्ण प्रकृति के साथ सद्भाव रखते हैं।

सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा देना:

- **विविधता का उत्सव:** आदिवासी कला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाती है। विभिन्न जनजातियों की अपनी अनूठी कला शैलियाँ होती हैं, जो उनकी संस्कृति और परंपराओं को दर्शाती हैं। यह विविधता भारत को एक समृद्ध और जीवंत देश बनाती है।
- **सामुदायिक भावना:** आदिवासी कला अक्सर सामूहिक प्रयासों से बनाई जाती है। कलाकार अपनी कला के माध्यम से कहानियां सुनाते हैं, अनुभव साझा करते हैं और समुदाय के साथ जुड़ते हैं। यह सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने और भावी पीढ़ियों को सौंपने में मदद करता है।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** आदिवासी कला विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देती है। जब लोग विभिन्न जनजातियों की कला का अनुभव करते हैं, तो वे उनकी संस्कृति, रीति-रिवाजों और विश्वासों के बारे में जानते हैं। यह सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को कम करने और सहिष्णुता और स्वीकृति को बढ़ावा देने में मदद करता है।
- **राष्ट्रीय एकता:** आदिवासी कला भारत की राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने में मदद करती है। यह कला देश के समृद्ध इतिहास और विरासत को दर्शाती है, और लोगों को एकजुट करती है।

उदाहरण:

- **मध्य प्रदेश के गोंड और झारखंड के संथाल की रंगीन चित्रकारी:** ये कलाकृतियाँ सामाजिक जीवन, धार्मिक अनुष्ठानों और प्राकृतिक दुनिया के चित्रण के लिए प्रसिद्ध हैं।
- **छत्तीसगढ़ के बस्तर का मुरिया नृत्य:** यह नृत्य, जीवन चक्र, प्रकृति और देवी-देवताओं को दर्शाता है।
- **गुजरात और मध्य प्रदेश के राठवा, भिलाल और नायका समुदायों की पिथौरा पेंटिंग:** यह कला, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक उत्सवों के लिए बनाई जाती है।
- **ओडिशा की ढोकरा पीतल की मूर्तियाँ:** ये मूर्तियाँ, देवी-देवताओं और पौराणिक जीवों को दर्शाती हैं।
- **पश्चिम बंगाल का टेराकोटा बांकुरा:** यह कला, विभिन्न आकृतियों और मूर्तियों के माध्यम से लोककथाओं और पौराणिक कथाओं को दर्शाती है।

आदिवासी कला के संरक्षण की चुनौतियां:

- **आधुनिकीकरण का प्रभाव:** आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के कारण, आदिवासी कला परंपराएं खतरे में हैं। युवा पीढ़ी पारंपरिक कला सीखने में कम रुचि दिखा रही है, और कलाकारों को अपनी कला से जीविका कमाने में कठिनाई हो रही है।
- **सरकारी सहायता का अभाव:** आदिवासी कलाकारों को अक्सर सरकारी सहायता और प्रोत्साहन की कमी का सामना करना पड़ता है। कला को बढ़ावा देने और कलाकारों को सशक्त बनाने के लिए अधिक सरकारी पहलों की आवश्यकता है।

- **शोषण और विनियोग**: आदिवासी कला का शोषण और विनियोग एक गंभीर चिंता का विषय है। कुछ लोग आदिवासी कला का उपयोग लाभ के लिए करते हैं, बिना कलाकारों को उचित मुआवजा दिए या उनकी कला के पीछे के सांस्कृतिक महत्व का सम्मान किए।

निष्कर्ष:

आदिवासी कला भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल हिस्सा है। यह कला सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा देने, समुदायों को जोड़ने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आदिवासी कला के संरक्षण और कलाकारों को सशक्त बनाने के लिए सरकारी और सामाजिक प्रयासों की आवश्यकता है।

जनजातीय संस्कृति वैश्विक प्रतिनिधित्व का सामर्थ्य

भूमिका

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में जनजातीय कला एक अमूल्य रत्न है। यह कला, जो विभिन्न रूपों जैसे चित्रकला, बुनाई, मिट्टी के बर्तन, धातुकर्म, लकड़ी का काम, संगीत और नृत्य में अभिव्यक्त होती है, सदियों से चली आ रही परंपराओं, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और आध्यात्मिक विश्वासों को दर्शाती है।

भारत के जनजातीय समुदायों के कला रूप और दैनिक प्रथाएं पर्यावरण-अनुकूल जीवन जीने में मूल्यवान सीख प्रदान करती हैं और ये दर्शाती हैं कि किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान और तकनीकें पर्यावरण के साथ अधिक धनिष्ठ संबंध स्थापित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, शिल्प में जैविक सामग्रियों का उपयोग, पवित्र उपवनों के माध्यम से स्थानीय वनस्पतियों और जीवों का संरक्षण, और टिकाऊ फसल कटाई पद्धतियाँ जीवन के एकीकृत दृष्टिकोण को उजागर करती हैं जो वैश्विक पर्यावरणीय कार्यनीतियों को प्रेरित कर सकती हैं।

महत्व और प्रासंगिकता

जनजातीय कला न केवल सौंदर्य की दृष्टि से मनोरम है, बल्कि यह सांस्कृतिक विविधता, पर्यावरणीय चेतना और स्थायी जीवन जीने के ज्ञान का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह सदियों के अनुभव और ज्ञान को संजोता है, जो आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक और मूल्यवान है।

चुनौतियाँ और खतरे

आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभावों के कारण, भारत की जनजातीय कला अनेक खतरों से जूझ रही है। इनमें शामिल हैं:

- **सांस्कृतिक क्षरण**: आधुनिक संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक कलाओं और रीति-रिवाजों का ह्रास हो रहा है।
- **आर्थिक शोषण**: कलाकारों और कारीगरों का शोषण, उचित मूल्य न मिलना, और बौद्धिक संपदा अधिकारों का अभाव।
- **पर्यावरणीय क्षरण**: प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, जिससे कला सामग्री का नुकसान होता है।
- **युवा पीढ़ी का अनादर**: युवा पीढ़ी में पारंपरिक कलाओं के प्रति रुचि कम होना।

वारली पेंटिंग

वारली जनजाति, महाराष्ट्र

वारली कला अब विश्व-स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुकी है, यह जितनी सरल है, उतनी ही जटिल भी है और यही बात इसे अद्वितीय बनाती है। मिट्टी की दीवारों पर सफेद रंग से चित्रित, जिसमें कभी-कभी लाल और पीले रंग के बिंदु होते हैं, वारली कला जनजाति की पारंपरिक जीवन शैली को दर्शाती है। केवल एक वृत्त, एक त्रिभुज और एक वर्ग का उपयोग करते हुए, मोनोसिलैबिक अनुष्ठान दीवार चित्रों में अक्सर शिकार, मछलियों, नृत्यों, पेड़ों और जानवरों के विषय होते हैं।

वारली चित्रकला में दर्शाए गए अनोखे पहलुओं में से एक है तरपा नृत्य। तरपा, एक तुरही जैसा वाद्य यंत्र है, जिसे अलग-अलग गाँव के पुरुष बारी-बारी से बजाते हैं। पुरुष और महिलाएं अपने हाथों को आपस में जोड़कर तरपा बजाने वाले के चारों ओर एक घेरा बनाकर घूमते है।

वारली चित्रकला में गेरू (लाल माटी), चावल पाउडर पेस्ट (तंदुल पिठ), गोबर पेस्ट (शेन), कोयला पाउडर, प्राकृतिक गोंद और पेड़ों से चिपकने वाले पदार्थों का इस्तेमाल पारंपरिक रंगों के रूप में किया जाता है, लेकिन आजकल आधुनिक रंगों का इस्तेमाल भी आधार सामग्री के रूप में किया जाता है।

संरक्षण और संवर्धन के लिए रणनीति

इन चुनौतियों का सामना करने और भारत की जनजातीय कला को बचाने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है।

- **समुदाय आधारित पहल**: कलाकारों और कारीगरों को सशक्त बनाना, उचित प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करना, और सहकारी समितियों का गठन करना।
- **बाजार तक पहुंच**: कला और हस्तशिल्प के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच प्रदान करना, उचित मूल्य सुनिश्चित करना, और प्रमाणीकरण और भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग का उपयोग करना।
- **शिक्षा और जागरूकता**: स्कूली पाठ्यक्रम में जनजातीय कला को शामिल करना, जन जागरूकता अभियान चलाना, और जनजातीय कला पर आधारित प्रदर्शनियां और कार्यशालाएं आयोजित करना।

- **अनुसंधान और दस्तावेजीकरण**: लुप्तप्राय कला रूपों का दस्तावेजीकरण करना, अनुसंधान को प्रोत्साहित करना, और ज्ञान का प्रसार करना।
- **नीतिगत ढांचा**: जनजातीय कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए मजबूत नीतिगत ढांचा विकसित करना, कानूनी सुरक्षा प्रदान करना, और वित्तीय सहायता सुनिश्चित करना।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग**: सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और संयुक्त परियोजनाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सहयोग करना।

निष्कर्ष:

भारत की जनजातीय कला न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, बल्कि यह स्थायी विकास और सामाजिक समावेश के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसे संरक्षित और संवर्धित करना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

कृषि महोत्सव : आदिवासी संस्कृति का अभिन्न अंग

परिचय:

- भारत विविध संस्कृतियों का देश है, जिसमें आदिवासी संस्कृति अपनी समृद्ध परंपराओं, रीति-रिवाजों और त्योहारों के लिए जानी जाती है। इन त्योहारों में से कई कृषि से जुड़े हैं, जो आदिवासी जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- भारत मे 730 से ज्यादा अनुसूचित जनजातियां है, जिनमें से हर एक की अपनी सस्कृति, रीति-रिवाज, भाषा और जीवनशैली है।

> अपनी सांस्कृतिक विरासत के एक हिस्से के रूप में, सभी जनजातियां देवताओं को प्रसन्न करने और आशीर्वाद के लिए मां प्रकृति का सम्मान करने के लिए विभिन्न त्यौहार मनाती हैं। कृषि त्यौहार भी इसी का हिस्सा हैं। अधिकांश कृषि त्यौहार साल में दो बार मनाए जाते हैं, एक खेती की शुरुआत में और दूसरा फसल की कटाई के समय। आमतौर पर ये सामुदायिक उत्सव होते हैं जिसमें पारंपरिक भोजन, संगीत, नृत्य आदि के साथ देवताओं की पूजा की जाती है। आजकल पर्यटकों का भी इन समारोहों में गर्मजोशी से स्वागत किया जाता है जहां वे भारत की समृद्ध और विविध आदिवासी संस्कृति का अनुभव करते हैं।

आदिवासी कृषि त्यौहार:

- अपनी सांस्कृतिक विरासत के एक हिस्से के रूप में, सभी जनजातियां देवताओं को प्रसन्न करने और आशीर्वाद के लिए मां प्रकृति का सम्मान करने के लिए विभिन्न त्यौहार मनाती हैं।

- विभिन्न कृषि गतिविधियां, जैसे बुवाई, फसलों की देखभाल, कटाई आदि, अपने सर्वोत्तम परिणामों के लिए प्रकृति/मौसम पर निर्भर हैं।
- इसलिए मौसम की स्थिति में कोई भी प्रतिकूलता प्राचीन कृषि समाजों के लिए उनके अस्तित्व और जीविका के लिए एक बड़ी चुनौती थी।
- अपनी फसलों को किसी भी आपदा से सुरक्षित रखने के लिए, उन्होंने कृषि क्षेत्रों और संबंधित देवताओं की पूजा गीत, नृत्य और विभिन्न प्रसाद के साथ करना शुरू कर दिया।

बिहान मेला

बिहान मेला, ओडिशा के कोंध जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण बीज उत्सव है। "बिहान" शब्द का शाब्दिक अर्थ "बीज" होता है, जो इस उत्सव के सार को दर्शाता है। यह उत्सव, पहाड़ियों और जंगलों से घिरे दासपल्ला ब्लॉक के 40 से अधिक गांवों के किसानों को एक साथ लाता है।

बिहान मेले के मुख्य आकर्षण:

- **बीजों का प्रदर्शन और विनिमय**: विभिन्न प्रकार के बीजों को प्रदर्शित किया जाता है और किसान एक दूसरे के साथ बीजों का आदान-प्रदान करते हैं।
- **कृषि प्रदर्शनियां**: नवीनतम कृषि तकनीकों, उपकरणों और उर्वरकों का प्रदर्शन किया जाता है।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम**: पारंपरिक नृत्य, गीत और संगीत प्रस्तुत किए जाते हैं।
- **स्थानीय व्यंजनों का आनंद**: विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं।

महत्व:

- **आभार व्यक्त करना**: ये त्यौहार प्रकृति और देवी-देवताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक तरीका हैं, जिन्होंने अच्छी फसल प्रदान की है।
- **सांस्कृतिक विरासत**: ये त्यौहार आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को जीवित रखने में मदद करते हैं।
- **सामाजिक जुड़ाव**: ये त्यौहार समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाते हैं और सामाजिक बंधन को मजबूत करते हैं।

- **पर्यटन को बढ़ावा देना**: ये त्यौहार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और आदिवासी संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करते हैं।

राज्य	त्योहार	विशेषताएं
मध्य प्रदेश	भगोरिया, करमा, हरेली	पारंपरिक नृत्य और संगीत, रंगीन वेशभूषा
छत्तीसगढ़	हरेली, पैट जात्रा	पारंपरिक अनुष्ठान, समुदायिक भोज
उत्तराखंड	हरेला	जौ के पौधे लगाना, सांस्कृतिक प्रदर्शन
आंध्र प्रदेश	लाल चने का सप्ताह उत्सव, पूला पंडगा	बीजों की पूजा, फूलों से सजावट
असम	अली-ऐ-लिगांग, पोरग	लोक नृत्य, पारंपरिक खेल, भोज
नगालैंड	ऐलोंग, मोआत्सी मोंग, बुशु दिमा	पारंपरिक गीत और नृत्य, खेल
अरुणाचल प्रदेश	म्योको, रेह, मोपिन, न्योकुम	कृषि की समृद्धि के लिए रस्म, समुदायिक भोज
सिक्किम	लोसर, साकेवा, लोसूंग	मास्क नृत्य, तीरंदाजी प्रतियोगिता, पारंपरिक वेशभूषा

निष्कर्ष:

- आदिवासी कृषि त्यौहार न केवल फसलों की कटाई का जश्न मनाते हैं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और आने वाले वर्ष के लिए समृद्धि और अच्छी फसल के लिए आशीर्वाद मांगने का भी अवसर होते हैं।
- ये त्यौहार आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृति विरासत और परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं।
- पर्यटकों के लिए, ये त्यौहार आदिवासी जीवनशैली और संस्कृति की झलक पाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं।

पूर्वोत्तर भारत के प्रसिद्ध आदिवासी लोकनृत्य

पूर्वोत्तर भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है, जिसमें विभिन्न जनजातियों और समुदायों के अनूठे लोकनृत्य शामिल हैं। ये नृत्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि इनकी जड़ें गहरी परंपराओं, विश्वासों और जीवन शैली में निहित हैं।

दो सौ से अधिक जनजातियों और सजातीय समुदायों का घर, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को अक्सर त्यौहारों, संगीत और नृत्य के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक जनजाति या समुदाय के अपने अलग-अलग त्यौहार होते हैं जिनमें से अधिकांश बुआई, फसल कटाई और नए वर्ष पर केंद्रित होते हैं। इस लेख में पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के कुछ प्रसिद्ध लोक नृत्यों की जानकारी दी गई है।

1. **अरुणाचल प्रदेश**:

- **रिखम पाडा**: निशी जनजाति का यह नृत्य बेंत की टोपी और कमर-बेल्ट के उपयोग से विशिष्ट पहचान रखता है। यह नृत्य देवताओं और पूर्वजों को श्रद्धांजलि देने और सामुदायिक भावना को मजबूत करने का एक माध्यम है।
- **पोनुंग**: सोलुंग उत्सव का हिस्सा, यह नृत्य कृषि चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। महिलाओं द्वारा मिरी नामक पुरुष के मार्गदर्शन में प्रस्तुत, यह नृत्य प्रजनन क्षमता और समृद्धि के लिए प्रार्थना करता है।
- **डेलॉन्ग**: एटोर उत्सव के दौरान पुरुषों द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य, समुदाय द्वारा खेतों की रक्षा करने और उनकी देखभाल करने के महत्व को दर्शाता है।
- **दामिंडा**: अपातानी लोगों का यह नृत्य ड्रि उत्सव के शुभारंभ और समापन का प्रतीक है। यह नृत्य कृषि ऋतु के चक्र का प्रतिनिधित्व करता है और प्रकृति के साथ तालमेल स्थापित करने की आवश्यकता को दर्शाता है।
- **मठवासी नृत्य**: अरुणाचल प्रदेश के मठों में किए जाने वाले विभिन्न नृत्य, बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और दर्शन को दर्शाते हैं। इन नृत्यों में मुखौटे, मुद्राएं और वेशभूषा का उपयोग गहन आध्यात्मिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

2. **असम**:

- **बागरुम्बा**: युवा बोडो महिलाओं द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य वसंत ऋतु और प्रकृति के खिलने का उत्सव है।
- **बर्दविसिखला**: बोडो समुदाय का यह नृत्य पवन देवी के स्वागत का प्रतीक है, जो कृषि और समृद्धि की देवी हैं।
- **गुमराग सोमन**: मिसिंग लोगों का यह नृत्य अली-ए-ये लिगांग (बीज बोने का त्यौहार) का हिस्सा है। यह नृत्य प्रजनन क्षमता,豐收 और नए जीवन की शुरुआत का प्रतीक है।

- **कार्बी नृत्य**: कार्बी समुदाय के विभिन्न नृत्य कृषि, मृत्यु संस्कार और सामाजिक उत्सवों से जुड़े हैं। रिटनोंग चिंगडी, लिंगपम सोकचोन और हाचा हेकन कृषि ऋतुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि निम्सो केरुंग और बंजार केकन मृत्यु संस्कारों से जुड़े अनुष्ठान हैं।

3. **मेघालय**:
   - **नोंगक्रेम**: खासी लोगों का यह नृत्य नोंगक्रेम उत्सव का हिस्सा है, जो वर्षा ऋतु और कृषि की सफलता का उत्सव है।
   - **वंगाला**: गारो समुदाय का यह नृत्य वंगाला महोत्सव का हिस्सा है, जो कठिन परिश्रम की अवधि के अंत का प्रतीक है और अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता है।
4. **मिज़ोरम** (continued):
   - **खुवल्लम** (continued): करने के लिए किया जाता है। पारंपरिक पोशाक और घंटियों की थाप के साथ किया जाने वाला यह नृत्य आतिथ्य और समुदाय की भावना का प्रतीक है।
   - **छेइह लाम**: यह नृत्य आनंद और खुशी का जश्न मनाता है। इसमें लोग एक घेरे में बैठकर गाते हैं और ताली बजाते हैं। धीरे-धीरे नृत्य में शामिल होने वालों की संख्या बढ़ती जाती है।
   - **पार लाम**: यह नृत्य प्रकृति के सौंदर्य का उत्सव है। युवा लड़कियां रंगीन पोशाक पहनकर फूलों से अपने बाल सजाती हैं और प्रकृति की महिमा का गुणगान करती हैं। वहीं, लड़के घंटा और तार वाले वाद्य यंत्र बजाते हैं। यह नृत्य धीमा और लहरदार होता है, जो बहती नदी के समान प्रतीत होता है।
5. **मणिपुर**:
   - **अशराई ओडो**: माओ जनजाति का यह नृत्य रंगीन वेशभूषा और लयबद्ध गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यह नृत्य खुशी और उत्सव का प्रतीक है।
   - **लुइवाट फ़िज़ाक**: तांगखुल जनजाति का यह नृत्य कृषि चक्र और आदिवासी जीवन शैली का चित्रण करता है। यह नृत्य विभिन्न फसल उत्सवों के दौरान किया जाता है। पुरुष और महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा पहनकर ड्रम, तुरही, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रों की धुन पर नृत्य करते हैं।
   - **शिम लैम**: काबुई जनजाति का यह नृत्य फ्लाइंग डांस के नाम से भी जाना जाता है। यह नृत्य रंगीन पंखों वाले कीट ताज़ुइबोन की कहानी को दर्शाता है।
   - **किट लैम**: यह नृत्य फसल उत्सव का हिस्सा है, जिसमें नृत्य की गतिविधियां झींगुरों की गति का अनुकरण करती हैं।
6. **नगालैंड**:
   - **सोवी केहू**: अंगामी जनजाति का यह लोकप्रिय नृत्य एक सामुदायिक उत्सव है। यह नृत्य एकजुटता और सामूहिक भावना का प्रतीक है।
   - **यिमडोंगसु त्सुंगसांग**: एओ जनजाति का यह नृत्य विरासत और आध्यात्मिकता का उत्सव है। पारंपरिक वेशभूषा और सजावट के साथ किया जाने वाला यह नृत्य सांस्कृतिक गौरव का प्रदर्शन करता है।

- **ओह हियो**: चाकेसांग लोगों का यह नृत्य त्योहारों और समारोहों के दौरान किया जाता है। नर्तक विभिन्न पक्षियों और जानवरों की गतिविधियों की नकल करते हैं।

7. **त्रिपुरा**:

- **होजागिरी**: रियांग जनजाति का यह नृत्य होजागिरी उत्सव के दौरान किया जाता है। यह नृत्य कृषि चक्र का चित्रण करता है और अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता है।
- **गरिया**: जमातिया और कलाई जनजातियां गरिया या शिव पूजा के दौरान गरिया नृत्य करती हैं। यह नृत्य भगवान शिव की पूजा से जुड़ा है और एकजुटता तथा सांस्कृतिक सद्भाव का प्रतीक है।

पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी लोकनृत्य संस्कृति और परंपराओं का एक जीवंत प्रदर्शन हैं। ये नृत्य न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक सद्भाव, धार्मिक मान्यताओं और प्राकृतिक दुनिया के साथ संबंध को भी दर्शाते हैं। ये नृत्य पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत

परिचय

भारत के आदिवासी समुदाय सदियों पुरानी परंपराओं और समृद्ध संस्कृति के धारक हैं। इन समुदायों द्वारा विकसित कला और शिल्प भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा हैं। पोचमपल्ली इकत की जटिल रंगाई से लेकर फुलकारी की जीवंत कढ़ाई तक, प्रत्येक कलाकृति एक कहानी कहती है, एक प्रतीक का प्रतिनिधित्व करती है, और एक विशिष्ट समुदाय की पहचान को दर्शाती है।

भारत में जनजातीय समुदायों को हाशिए पर रखने, आर्थिक असमानताओं और पारंपरिक भूमियों को हटाने जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, जनजातीय संस्कृतियां अपने अद्वितीय रीति-रिवाज़ों, भाषाओं और कला रूपों को संरक्षित करते हुए फल-फूल रही हैं। भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य इसके जनजातीय समुदायों की जीवंत परंपराओं से काफी समृद्ध है, जिसमें प्रकृति और स्वदेशी मान्यताओं में गहराई से निहित संगीत, नृत्य, कला और अनुष्ठानों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत

- **भाषाई वैभव**: भारत में 400 से अधिक जनजातीय भाषाएँ बोली जाती हैं, जो द्रविड़ियन, इंडो-आर्यन, ऑस्ट्रो-एशियाटिक और तिब्बती-बर्मन भाषा परिवारों से संबंधित हैं। यह भाषाई विविधता भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण है।
- **कला और शिल्प का वैभव**: प्रत्येक जनजातीय समूह अपनी विशिष्ट कला और शिल्प परंपराओं को विकसित करता है, जो उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति और कल्पनाशीलता को

दर्शाता है। मूर्तियां, चित्रकला, वस्त्र, गहने और बांस और मिट्टी के बर्तन जैसी कलाकृतियां उनकी विश्वास प्रणालियों, पौराणिक कथाओं और प्राकृतिक वातावरण से प्रेरित होती हैं।

- **संगीत और नृत्य की धुनें**: प्रत्येक जनजातीय समूह की अपनी अनूठी संगीत और नृत्य परंपराएँ होती हैं, जो उनके उत्सवों, अनुष्ठानों और सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। ढोल, बांसुरी, तार वाले वाद्य और स्वदेशी ताल वाद्य इन धुनों को जीवन प्रदान करते हैं।
- **रीति-रिवाजों और परंपराओं की विविधता**: विवाह, जन्म, मृत्यु और त्योहारों से जुड़े प्रत्येक जनजातीय समूह के अपने विशिष्ट रीति-रिवाज और परंपराएँ होती हैं। ये रीति-रिवाज सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने, सांस्कृतिक मूल्यों को प्रसारित करने और पीढ़ियों के बीच ज्ञान हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कला और हस्तशिल्प

- **वस्त्र**: पोचमपल्ली इकत से लेकर फुलकारी तक, भारत के आदिवासी समुदायों द्वारा बनाए गए वस्त्र जटिल पैटर्न, जीवंत रंगों और गहरे प्रतीकात्मक अर्थों से भरे होते हैं।
- **आभूषण**: चांदी, डोकरा और टेराकोटा से बने, आदिवासी आभूषण कुशल कारीगरी और प्राचीन तकनीकों का प्रदर्शन करते हैं, जो पहनने वाले की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं।
- **शरीर कला**: टैटू से लेकर मेहंदी तक, आदिवासी शरीर कला सौंदर्य, आध्यात्मिकता और सामाजिक समूह की पहचान को दर्शाती है।
- **अन्य हस्तशिल्प**: आदिवासी समुदाय बांस, लकड़ी, मिट्टी और धातु से बने विभिन्न प्रकार के उपयोगी और सजावटी सामान बनाते हैं, जो उनकी रचनात्मकता और कौशल का प्रदर्शन करते हैं।

त्यौहार और नृत्य

- **त्यौहार**: वांगला, मिम कुट, ज़ीरो और पौष मेला जैसे त्यौहार आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और कृषि जीवन का उत्सव मनाते हैं।
- **नृत्य**: प्रत्येक आदिवासी समुदाय के अपने विशिष्ट नृत्य होते हैं जो उनकी कहानियों, मिथकों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

चुनौतियों का सामना:

- **हाशिए पर रखना और सामाजिक बहिष्कार**: कई जनजातीय समुदाय गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच की कमी, और विकास के अवसरों से वंचित हैं।
- **सांस्कृतिक पहचान का क्षरण**: आधुनिकीकरण, बाहरी प्रभावों और पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण, कुछ जनजातीय समुदाय अपनी भाषाओं, रीति-रिवाजों और विश्वासों को खोने का खतरा महसूस करते हैं।

- **भूमि अधिकारों का उल्लंघन**: खनन, वनों की कटाई और बांधों के निर्माण जैसी विकास गतिविधियाँ कई जनजातीय समुदायों के पारंपरिक निवास स्थान और आजीविका को खतरे में डालती हैं।

संरक्षण और संवर्धन के प्रयास:

- **संवैधानिक और कानूनी सुरक्षा**: भारतीय संविधान अनुसूचित जनजातियों को विशेष अधिकार और सुरक्षा प्रदान करता है। अनुसूचित जनजाति और अन्य वनवासी (वन अधिकार अधिनियम), 2006 जैसे कानून उनके वन अधिकारों और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हैं।
- **सरकारी योजनाएं**: जनजातीय समुदायों को कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से सशक्त बनाना उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आदिवासी कला और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल आदिवासी संस्कृति को प्रदर्शित करने और इन कला रूपों को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- **शिक्षा और जागरूकता**: जनजातीय समुदायों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देना उनकी संस्कृति और भाषाओं के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, सांस्कृतिक विरासत के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना भी जरूरी है।
- **कला और संस्कृति का दस्तावेजीकरण**: लोक कलाओं, नृत्यों, संगीत और कहानियों का दस्तावेजीकरण करके अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सकता है। अभिलेखागार, संग्रहालय और डिजिटल मंच जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **पर्यटन को बढ़ावा देना**: पर्यटन को जनजातीय समुदायों के आर्थिक विकास का एक साधन बनाया जा सकता है, बशर्ते पर्यटन विकास उनके पारंपरिक जीवन शैली और पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए किया जाए।
- **आधुनिक मीडिया का उपयोग**: रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट जैसे आधुनिक मीडिया का उपयोग जनजातीय भाषाओं और कला रूपों को बढ़ावा देने और व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

भारत की जनजातीय संस्कृतियां देश की सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल हिस्सा हैं। इन संस्कृतियों का संरक्षण और संवर्धन न केवल इन समुदायों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समग्र रूप से भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को भी सुनिश्चित करता है। जनजातीय समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करते हुए उनकी संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करने और उनका सम्मान करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों के बीच सार्थक संवाद और सहयोग यह सुनिश्चित करेगा कि भारत की समृद्ध जनजातीय विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए फलती-फूलती रहे।